1967G A Meaningful Prayer

Ek Bhavpurn Vinati (In Sanmati Sandesh, 1967)

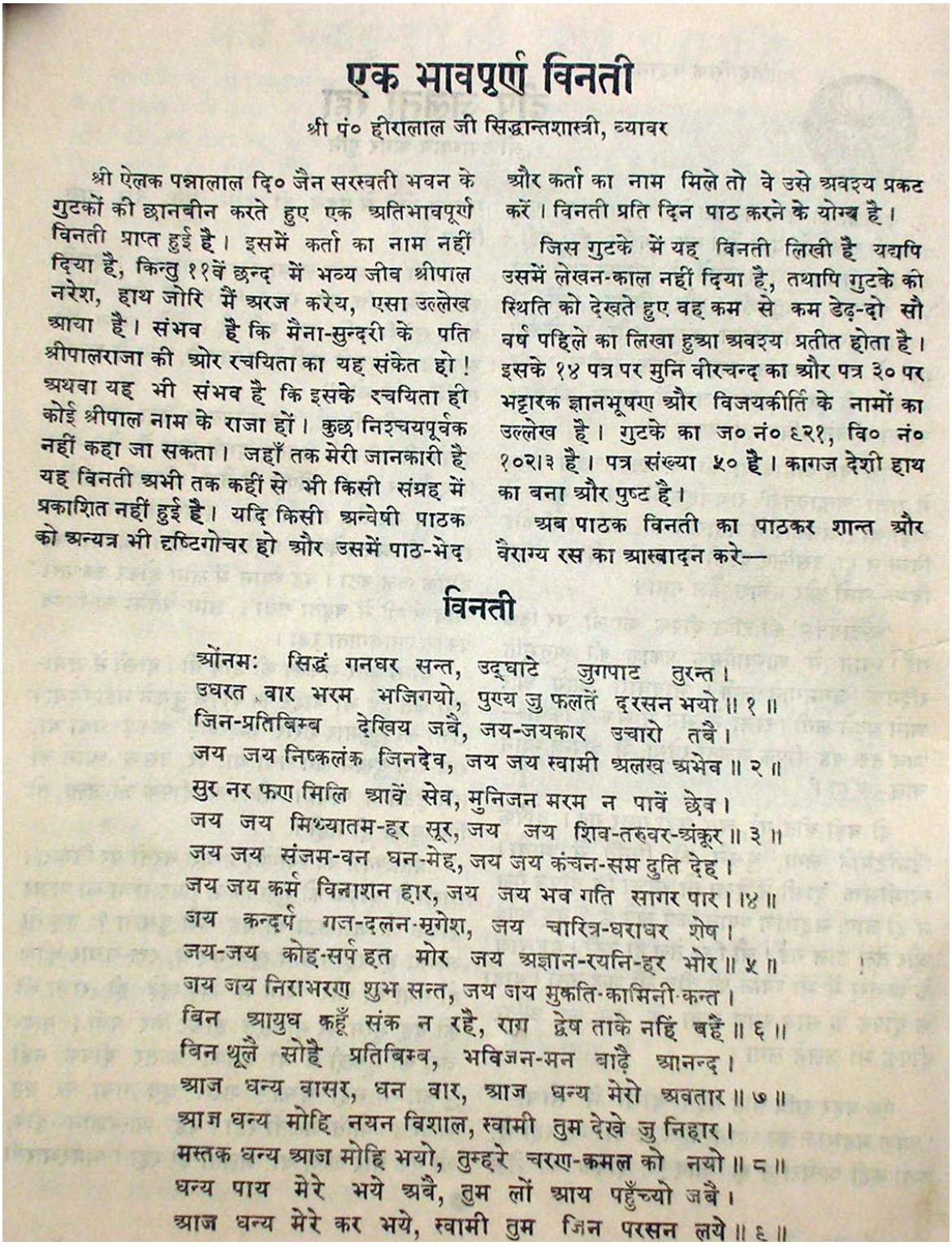

एक भावपूर्ण विनती

श्री पं० हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री, ब्यावर

श्री ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन के गुटकों की छानबीन करते हुए एक अतिभावपूर्ण विनती प्राप्त हुई है। इसमें कर्ता का नाम नहीं दिया है, किन्तु ११वें छन्द में भव्य जीव श्रीपाल नरेश, हाथ जोरि मैं अरज करेय, एसा उल्लेख आया है। संभव है कि मैना-सुन्दरी के पति श्रीपालराजा की ओर रचयिता का यह संकेत हो! अथवा यह भी संभव है कि इसके रचयिता ही कोई श्रीपाल नाम के राजा हों। कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक मेरी जानकारी है यह विनती अभी तक कहीं से भी किसी संग्रह में प्रकाशित नहीं हुई है। यदि किसी अन्वेषी पाठक को अन्यत्र भी दृष्टिगोचर हो और उसमें पाठ-भेद और कर्ता का नाम मिले तो वे उसे अवश्य प्रकट करें। विनती प्रति दिन पाठ करने के योग्य है।

जिस गुटके में यह विनती लिखी है यद्यपि उसमें लेखन-काल नहीं दिया है, तथापि गुटके की स्थिति को देखते हुए वह कम से कम डेढ़-दो सौ वर्ष पहिले का लिखा हुआ अवश्य प्रतीत होता है। इसके १४ पत्र पर मुनि वीरचन्द का और पत्र ३० पर भट्टारक ज्ञानभूषण और विजयकीर्ति के नामों का उल्लेख है। गुटके का ज० नं० ६२१, वि० नं० १०२।३ है। पत्र संख्या ५० है। कागज देशी हाथ का बना और पुष्ट है।

अब पाठक विनती का पाठकर शान्त और वैराग्य रस का आस्वादन करे—

विनती

ओंनमः सिद्धं गनधर सन्त, उद्घाटे जुगपाट तुरन्त।
उघरत वार भरम भजिगयो, पुण्य जु फलतें दरसन भयो ॥ १ ॥
जिन-प्रतिबिम्ब देखिय जबै, जय-जयकार उचारो तबै।
जय जय निष्कलंक जिनदेव, जय जय स्वामी अलख अभेव ॥ २ ॥
सुर नर फण मिलि आवें सेव, मुनिजन मरम न पावें छेव।
जय जय मिथ्यातम-हर सूर, जय जय शिव-तरुवर-अंकूर ॥ ३ ॥
जय जय संजम-वन घन-मेह, जय जय कंचन-सम दुति देह।
जय जय कर्म विनाशन हार, जय जय भव गति सागर पार। ।४ ॥
जय कन्दर्प गज-दलन-मृगेश, जय चारित्र-धराधर शेष।
जय-जय कोह-सर्प हत मोर जय अज्ञान-रयनि-हर भोर ॥ ५ ॥
जय जय निराभरण शुभ सन्त, जय जय मुकति-कामिनी-कन्त।
बिन आयुध कहूँ संक न रहै, राग द्वेष ताके नहिं बहै ॥ ६ ॥
बिन थूलै सोहै प्रतिबिम्ब, भविजन-मन बाढ़ै आनन्द।
आज धन्य वासर, धन वार, आज धन्य मेरो अवतार ॥ ७ ॥
आज धन्य मोहि नयन विशाल, स्वामी तुम देखे जु निहार।
मस्तक धन्य आज मोहि भयो, तुम्हरे चरण-कमल को नयो ॥ ८ ॥
धन्य पाय मेरे भये अबै, तुम लों आय पहुँच्यो जबै।
आज धन्य मेरे कर भये, स्वामी तुम जिन परसन लये ॥ ९ ॥

आजहिं मुख पवित्र मो भयो, रसना धन्य नाम जब लयो।
आजहिं मेरो दुख सब हरयो, आज हिं मोह कलंक सब टरयो ॥ १० ॥
मेरो पाप गयो सब आज, आज हिं सुधरौ मेरो काज।
अति उद्यत भयो मोरो हियो, पणविवि नमस्कार जब कियो ॥ ११ ॥
जय जिनवर सब हरन कलेश, शीलांकृत तुम करन जिनेश।
तुम विनु जीव फिरै संसार, जो इनि संकट सहै अपार ॥ १२ ॥
तुम विनु करम न छांडै संग, तुम विनु मन उपजै भ्रम-भंग।
तुम विनु भव-आतापहिं सहै, तुम विनु जरा जनम मृतु दहै ॥ १३ ॥
तुम विनु कोई न लेइ उबार, तुम विनु करम न मेटै गार।
तुम विनु दुरित दुक्ख को हरै, तुम विनु कौन परम सुख करै ॥ १४ ॥
तुम विनु को काटै जम फंद, तुम विनु को पुरवै आनंद।
तुम विनु उपजै कुमति कुभाव, तुम विनु और न कोई सहाय ॥ १५ ॥
तुम विनु हितु न दूजौ कोई, तुम विनु शुभ गति कबहुं न होई।
तुम विनु हों पापी भंडियो, काल अनादि वाद हिंडियो ॥ १६ ॥
तुम विनु मैं दुख पायौ घनौ, वेदन-शूल कहालों गिनो।
मैं मनमें नहीं जानों सोइ, तातें दरश तुम्हारो होइ ॥ १७ ॥
जाके कुल नाहीं जिन देव, नहीं जानें दश लक्षण भेव।
जाके गुरु निरग्रन्थ न होंय, ताहि विवेक कहातें होय ॥ १८ ॥
तातें मैं तुव दरशन लह्यो, आतम-अनुभव से मैं कर्यो।
तुम परमातम सिद्ध निधान, तुम अरहंत मोक्षपद-दान ॥ १९ ॥
तुम चिन्ता संशय दुख हारे, तुम स्वामी अजरा पद कारे।
भगति बीनती करों उछाह, स्वामी यह सेवा फल लाह ॥ २० ॥
इतनी स्तोत्र व्याजु मैं भनी, सगिरे पाप गये तत्क्षणी।
भव्य जीव श्रीपाल नरेश, हाथ जोरी मैं अरज करेय ॥ २१ ॥
कृपा तुम्हारी ऐसी होइ, जामन मरन मिटावहु मोहि।
वार वार मैं विनती करों, तुम सेवत संसार न परों ॥ २२ ॥
नाम लेत सब दुख मिट जांय, मैं तो दरशन देख्यौ आय।
तुम विनु प्रभू न दूजो कोय, तुम विनु एको काज न होय ॥ २३ ॥
मेरे मनमें उपजी सही, तुम देखत कुछ भ्रान्ति न रही।
महाराज, स्वामी वर वीर, भवदधि--तारन साहस धीर ॥ २४ ॥
पढैं सुनैं जे पावें सुक्ख, जनम-जनम नहिं भोगैं दुक्ख।
तीर्थंकर बंदौ जिनदेव, सीस नवाय करो पद सेव ॥ २५ ॥
शुद्ध भाव ताकौ मन भयों, सम्यग्दृष्टी मुकतहिं गयो।
(तातें विनऊं वारं वार, भव--सागरतें पार उतार) ॥ २६ ॥
इस अपार संसार में, तुम ही एक आधार।
डूबततें इस दास को, वेग उतारहु पार ॥ ७ ॥